ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

जून 2018 (द्वितीय)

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2018

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org

वेद प्रचार अभियान की झलकियां।

वेद प्रचार मण्डल जिला सोनीपत को वेद प्रचार वाहन भेंट करने के पश्चात् आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

वेद प्रचार मण्डल जिला सोनीपत को वेद प्रचार वाहन भेंट करने के पश्चात् आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए सभामंत्री श्री उमेद सिंह।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 14 अंक 10

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म्॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जून, 2018 (द्वितीय)

16 से 30 जून, 2018 तक

इस अंक में....

1. जिज्ञासा-विमर्श (वेद) 2
2. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी 4
3. आर्यसमाज के नियमों की संक्षिप्त व्याख्या 6
4. देश पर बलिदान होने वाले आर्य राष्ट्रनायकों को विनम्र श्रद्धांजलि 9
5. वेद–दयानन्द और ब्राह्मणवाद 10
6. आर्यों की धरती आर्यों का धर्म 11
7. कविता : आर्यसमाज में गुटबाजी क्यों? 12
8. पंजाब में आर्यसमाज 13
9. ओ३म् भूर्भुवः स्वः 14
10. समाचार-प्रभाग 15

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

जिज्ञासा-विमर्श (वेद)

❑ आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

गतांक से आगे....

सार्थक पुनरुक्ति के कारण-(1) अर्थ का वैशिष्ट्य दिखाना, (2) भिन्नार्थ को प्रकट करना, (3) काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तानुसार अलंकार की संयोजन करना, (4) किसी अर्थ तत्त्व पर विशेष बल देना, (5) प्रकरण भेद से भिन्नार्थ का बोध करना, (6) किसी विशेष प्रकरण की ओर ध्यान आकृष्ट करना अथवा विशेष अर्थतत्त्व को अध्येता के मन पर अच्छे प्रकार जमा देना आदि अनेक कारण पुनरुक्ति के होते हैं। वेदों में एक बात को ठीक से समझाने के लिए, अर्थविशेष को समझाने के लिए, प्रसंग भेद से भिन्न अर्थ का ज्ञान कराने के लिए, काव्य के सौंदर्य के लिए पुनरुक्तियाँ है।

एक उपदेशक अपने जीवन काल में एक ही उपदेश को अथवा किसी कथा को स्थान भेद से वा प्रसंग विशेष पर हजारों बार करता है, उसका वह उपदेश वा कथन हमें पुनरुक्त नहीं लगता। हम अपने जीवन में प्रत्येक दिन एक ही शब्द वा वाक्य को अनेक बार बोलते रहते हैं, वह हमें पुनरुक्त नहीं लगता। हम एक दिन में किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु का नाम न जाने कितनी बार लेते हैं, यह हमें पुनरुक्त नहीं लगता। पाणिनि अष्टाध्यायी को जानने वाले को 'बहुलं छन्दसि' सूत्र जो कि अष्टाध्यायी में इसी शब्दानुपूर्वी से 14 बार पढ़ा गया है, पुनरुक्त नहीं लगता। भाषा-विज्ञान को ठीक-ठीक जानने वाला उपरोक्त कारणों से कहे गए पुनर्वचन को दोषयुक्त नहीं देखता, अपितु इस पुनर्वचन (पुनरुक्त) को आवश्यक समझता है।

जब हम इस प्रकार की पुनरुक्ति को सहजता से समझ लेते हैं, स्वीकार कर लेते हैं, तो वेद में आये पुनर्मन्त्रों को संशय की दृष्टि से नहीं देखते हैं, लेकिन हम वेद की शैली से परिचित नहीं हैं, वेद के अर्थगाम्भीर्य से, उसकी काव्यशैली से परिचित नहीं हैं। जैसे-जैसे यह परिचय बढ़ेगा, वैसे-वैसे हम वेद की पुनरुक्तियों को दोष रहित देखने में समर्थ होते जायेंगे।

आपने जो सामवेद के मन्त्र उद्धृत किये हैं, जो कि सामवेद के पूर्वार्चिक व उत्तरार्चिक दोनों में आए हैं, उनका दो बार आना मन्त्रसंख्या को बढ़ाना उद्देश्य नहीं है, अपितु इसके पूर्वोक्त कारण हैं, भले ही इन मंत्रों के ऋषि, देवता, छन्द एक ही हों।

(ख) वेदमन्त्रों के द्रष्टा को ऋषि कहते हैं। जिन-जिन महापुरुषों ने वेद के मन्त्रों को प्रथम बार साक्षात् किया, अर्थात् उन मन्त्रों के अर्थ का प्रत्यक्ष किया, वे उन मन्त्रों के ऋषि कहलाये। उन्हीं ऋषियों के नाम, उनके द्वारा प्रत्यक्ष किये गये मन्त्रों के साथ जुड़ गए, जो कि हमें आज परम्परा से वेदमन्त्रों के साथ उपलब्ध हो रहे हैं।

आपका कथन है कि अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा ऋषियों के नाम वेद के साथ क्यों नहीं, जबकि परमेश्वर ने इन्हीं को प्रथम बार वेद का ज्ञान दिया।

अग्नि आदि ऋषियों के नाम भले ही मन्त्रों के साथ न हों, किन्तु मूल वेद संहिताओं के साथ तो मोटे अक्षरों में मिलते ही हैं। किसी प्रकाशक से भूलवशात् छूट जायें तो पृथक् बात है। आप वेदभाष्य के साथ भी इन ऋषियों के नाम चाहते हैं। जैसे वेदभाष्य के कर्त्ता का नाम मिलता है, वैसे वेदभाष्य की पुस्तक पर अङ्गिरा आदि ऋषियों का नाम भी हो, यह आपकी इच्छा है। ऐसा किया जा सकता है, यह बात भाष्य पुस्तक के सम्पादक, भाष्यकार और प्रकाशक पर निर्भर करती है। यदि वे इस पर ध्यान दें तो यह हो सकता है। आपको वेदभाष्य पुस्तकों पर आदित्य आदि ऋषियों के नाम नहीं मिले, इसका कारण यह कदापि प्रतीत नहीं हो रहा कि किसी दुर्भावना से उनके नाम नहीं दिये, अपितु इसलिए कि इस बात को अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं समझा अथवा इस ओर ध्यान नहीं गया। वैसे भी वेद से सम्बन्ध रखने वाले लोग प्रायः जानते हैं कि कौन-सा वेद किस ऋषि से समबन्ध रखता है, उनके लिए इसकी आवश्यकता नहीं। हाँ, अन्य जन साधारण के लिए नाम लिखा जा सकता है। जिस ऋषि ने जिस वेद को प्राप्त किया उस ऋषि का नाम, प्राप्त हुए वेद के साथ मिलता है। उन ऋषियों ने परमेश्वर के अनुग्रह से पूरे वेद का ज्ञान प्राप्त किया, इसलिए एक-एक मन्त्र के साथ उनका नाम न होकर पूरी वेद संहिता के साथ उनका नाम मिलता है।

आपको बता दें कि जो मन्त्रों के साथ ऋषियों के नाम उपलब्ध हो रहे हैं, वे नाम प्रायः उनके वास्तविक न होकर

गौणिक हैं। अनेक ऋषियों के नाम उनके गौत्र के आधार पर मिलते हैं और अनेक के मन्त्रार्थ को प्रत्यक्ष करने से अर्थात् उस मन्त्र के विषय के आधार पर व अनेक के मन्त्र में आये शब्द के आधार पर नाम मिलते हैं।

इस समाधान को लिखने में आचार्य रामनाथ जी वेदालंकार की पुस्तक 'आर्षज्योति' का मुख्य सहयोग लिया गया है।

जिज्ञासा 5. मन्त्रों में अक्षरों के नीचे या ऊपर कुछ रेखाएँ होती हैं उनके क्या संकेत हैं? जैसे-

ओं (शन्नो॑) दे॒वीर॒भिष्टय॒ऽआ (पो॑)

-सोनाराम नेमधारी आर्यभूषण, कारोलिन, बेलडाट, मोरीशस

समाधान-मन्त्रों के ऊपर-नीचे रेखाएँ (।-) दिखाई देती हैं, वे स्वर चिह्न की रेखाएँ हैं। उदात्त, अनुदात्त और त्वरित-ये तीन स्वर होते हैं। इन स्वरों का अर्थ पर प्रभाव पड़ता है। दो शब्द एक जैसे दिखते हुए यदि उनमें स्वर का भेद है तो अर्थ का भेद भी होगा। जैसे स क॑र्त्ता, स क॒र्त्ता- इन दो वाक्यों में दो प्रकार के स्वर होने से दो ही प्रकार के अर्थ होते हैं। पहले का अर्थ-वह अगले दिन करेगा और दूसरे वाक्य का अर्थ है-वह करने वाला पुरुष है। यह अर्थभेद स्वर के कारण हुआ, इसमें और भी कारण हैं। जहाँ मन्त्र के अंश में कोई चिह्न नहीं दिखता वह उदात्त, जहाँ (-) ऐसी रेखा हो वह अनुदात्त और जहाँ (।) ये रेखा हो वह स्वरित का चिह्न कहलाता है। यह सब स्वरों के चिह्न ही हैं।

जिज्ञासा 6. वेदों की प्रामाणिकता या सत्ता को नहीं मानने वाला क्या कोई व्यक्ति ईश्वर को प्राप्त कर सकता है और ऋषि, महर्षि आदि कहला सकता है?

ईश्वर प्राप्ति से आशय 'मुक्ति' से है।

-मानवता, 194ए तीसरी मंजिल, पार्श्वनार्थ नगर, सांगानेर अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, जयपुर

समाधान-वेदों को न मानने वाला व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता और न ही ऋषि-महर्षि आदि कहला सकता है, क्योंकि ईश्वर का विशुद्ध स्वरूप वेद में ही कहा गया है, अन्य किसी मत के ग्रन्थ में नहीं। जब व्यक्ति ईश्वर के विशुद्ध स्वरूप को जानेगा ही नहीं, तो वह मुक्त कैसे हो सकता है? क्योंकि वेद में कहा है-

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥
(य० 31.18)

अर्थात् किस पदार्थ को जानके मनुष्य ज्ञानी होता है? **उत्तर**-उस महान् परमेश्वर ही को यथावत् जान के ठीक-ठीक ज्ञानी होता है, अन्यथा नहीं। जो सबसे बड़ा, सबका प्रकाश करने वाला और अविद्या-अन्धकार अर्थात् अज्ञानादि दोषों से रहित है, उसी पुरुष को मैं परमेश्वर और इष्टदेव जानता हूँ। उसको जाने बिना कोई मनुष्य यथावत् ज्ञानवान् नहीं हो सकता, क्योंकि उसी परमात्मा को जान के और प्राप्त होके जन्म-मरण आदि क्लेशों के समुद्र समान दुःख से छूट के परमानन्द स्वरूप मोक्ष को प्राप्त होता है अन्यथा किसी प्रकार से मोक्ष को प्राप्त नहीं हो सकता।

इसलिए जो ईश्वर का यथार्थ रूप से जानने वाला है, वह वेदों को अवश्य मानेगा। बिना वेदमन्त्रों के द्रष्टा होने के कोई ऋषि-महर्षि भी नहीं कहला सकता। ऋषि होने के लिए मन्त्रद्रष्टा बनना आवश्यक है। तात्पर्य यह है कि वेद को माने बिना व्यक्ति पूर्णरूप से मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता और न ही ऋषि कहला सकता।

जिज्ञासा 7. सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में वर्णानुसार सन्तान-परिवर्तन की व्यवस्था दी है, परन्तु ऋग्वेद में इसका निषेध है-

नहि ग्रभायारणः सुशेवोऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ।
अधा चिदोकः पुनरित्स एत्या नो वाज्यभीषाळेतु नव्य॥
(ऋ० 7.4.8)

इस स्थिति में शंका उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि महर्षि जी ने किस आधार पर सन्तान-परिवर्तन की व्यवस्था दी है तथा अब समाधान कैसे होगा?

-इन्द्रजित्देव, चूना भट्ठिया, सिटी सैंटर के निकट, यमुनानगर-135001 (हरयाणा)

समाधान-आपकी जिज्ञासा, महर्षि के द्वारा वर्णित वर्णानुसार सन्तान होनी चाहिए, इस पर है। यदि ब्राह्मण कुल में उत्पन्न क्षत्रिय गुण कर्म वाला पुत्र है तो वह क्षत्रिय वर्ण का कहलावे और ऐसा क्षत्रिय परिवार जिसका पुत्र ब्राह्मण गुण कर्म वाला है, वह ब्राह्मण वर्ण का कहावे। वे दोनों आपस में पुत्रों को बदल लें, ऐसा अन्य वर्णों के लिए भी है। दूसरा, वेद में कहा कि अपने गोत्र में उत्पन्न को ही ग्रहण करे। इन दोनों स्थलों को देखने पर आपकी जिज्ञासा स्वाभाविक लगती है। क्रमशः अगले अंक में....

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

एकादश समुल्लास के प्रश्नोत्तर

गतांक से आगे....

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

प्रश्न 765. वाममार्गियों में सर्वोपरि मुख्य चक्रवर्ती राजा के समान कौन माना जाता है?

उत्तर-जो 'दीक्षित' अर्थात् कलार के घर पर जाकर बोतल चढ़ावे। रण्डियों के घर में जाके उनसे कुकर्म करके सोवे, जो इत्यादि कर्म निर्लज्ज, निःशंक होकर करे, वही

वाममार्गियों में सर्वोपरि मुख्य चक्रवर्ती राजा के समान माना जाता है। अर्थात् जो बड़ा कुकर्मी, वही उनमें बड़ा और जो अच्छे काम करे और बुरे कामों से डरे, वही छोटा।

प्रश्न 766. वाममार्गियों के अनुसार 'जीव' और 'शिव' का क्या स्वरूप है?

उत्तर-जो लोकलज्जा, शास्त्रलज्जा, कुललज्जा, देशलज्जा आदि पाशों में बंधा है वह 'जीव' और जो निर्लज्ज होकर बुरे काम करे, वही सदा 'शिव' है।

प्रश्न 767. वाममार्गियों के 'उड्डीस' तन्त्र में क्या प्रयोग लिखा है? **उत्तर**-उड्डीस तंत्र आदि में एक प्रयोग लिखा है कि एक घर में चारों ओर आलय हों। उनमें मद्य के बोतल भर के धर देवें। इस आलय से एक बोतल पीके दूसरे आलय पर जावे। उसमें से पी तीसरे और तीसरे में से पीके चौथे आलय में जावे। खड़ा-खड़ा तब तक मद्य पीवे कि जब तक लकड़ी के समान पृथ्वी पर न गिर पड़े। फिर जब नशा उतरे तब उसी प्रकार पीकर गिर पड़े। पुनः तीसरी बार इसी प्रकार पीके गिरके उठे तो उसका पुनर्जन्म नहीं होता, अर्थात् सच तो यह है कि ऐसे-ऐसे मनुष्यों का पुनः मनुष्य जन्म होना ही कठिन है, किन्तु नीच योनि में गिरकर बहुकालपर्यन्त पड़ा रहेगा।

प्रश्न 768. वाममार्गियों की दस महाविद्याओं में मातंगी विद्या क्या है?

उत्तर-वाममार्गियों के तंत्र ग्रन्थों में यह नियम है कि माता को छोड़ के अन्य किसी स्त्री को भी न छोड़ना चाहिए अर्थात् चाहे कन्या हो वा भगिनी आदि क्यों न हो, सबके साथ संगम करना चाहिए। इन वाममार्गियों में दस विद्याएं प्रसिद्ध हैं, उनमें से एक मातंगी विद्या वाला कहता है कि **'मातरमपि न त्यजेत्'** अर्थात् माता को भी समागम किए बिना न छोड़ना चाहिए। और स्त्री-पुरुष के समागम समय में मन्त्र जपते हैं कि हमको सिद्धि प्राप्त हो जाये। ऐसे पागल महामूर्ख मनुष्य भी संसार में बहुत न्यून होंगे।

प्रश्न 769. वाममार्गियों का सौत्रामणी यज्ञ क्या है?

उत्तर-सौत्रामणी यज्ञ में मद्य पीवे, इसका अर्थ तो यह है कि सौत्रामणी यज्ञ में 'सोमरस' अर्थात् सोमवल्ली का रस पीये। 'प्रोक्षित' अर्थात् यज्ञ में मांस खाने में दोष नहीं, ऐसी पामरपन की बातें वाममार्गियों ने चलाई हैं। उनसे पूछना चाहिए कि जो वैदिकी हिंसा हिंसा न हो तो तुझे और तेरे कुटुम्ब को मारकर होम कर डाले तो क्या चिन्ता है?

प्रश्न 770. अश्वमेध, गोमेध, नरमेध आदि शब्दों के क्या अर्थ हैं?

उत्तर-घोड़े, गाय और पशु तथा मनुष्य मार के होम करना कहीं नहीं लिखा, केवल वाममार्गियों के ग्रन्थों में ऐसा अनर्थ लिखा है और जहाँ-जहाँ किसी शास्त्र में लेख है, वहाँ-वहाँ भी वाममार्गियों ने प्रक्षेप किया है। देखो, राजा न्याय धर्म से प्रजा का पालन करे, विद्यादि का देनेहारा यजमान और अग्नि में घी का होम करना अश्वमेध। अन्न, इन्द्रियां, किरण, पृथ्वी आदि को पवित्र रखना 'गोमेध'। जब मनुष्य मर जाये तब उसके शरीर का विधिवत् दाह करना 'नरमेध' कहाता है।

प्रश्न 771. यज्ञकर्त्ता कहते हैं कि यज्ञ करने से यजमान और पशु स्वर्गगामी होते थे तथा होम करके फिर पशु को जीता करते थे, यह बात सच्ची है वा नहीं?

उत्तर-नहीं, जो स्वर्ग को जाते हों तो ऐसी बात कहने वाले को मार के होमकर स्वर्ग में पहुंचाना चाहिए वा उसके प्रिय माता, पिता, स्त्री व पुत्रादि को मार होम कर स्वर्ग में क्यों नहीं पहुँचाते? वा वेदी में से पुनः क्यों नहीं जिला देते हैं?

प्रश्न 772. जब यज्ञ करते हैं तो वेदों के मन्त्र पढ़ते हैं। जो वेदों में न होते तो कहाँ से पढ़ते?

उत्तर-मन्त्र किसी को कहीं पढ़ने से नहीं रोकता, क्योंकि वह एक शब्द है। परन्तु उनका अर्थ ऐसा नहीं है कि पशु को मार के होम करना। जैसे 'अग्नये स्वाहा' इत्यादि मन्त्रों का अर्थ-अग्नि में हवि, पुष्टिकारक घृतादि उत्तम पदार्थों के होम करने से वायु, वृष्टि, जल शुद्ध होकर जगत् को सुखकारक होते हैं। परन्तु इन सत्य अर्थों को वे मूढ़ नहीं समझते थे। क्योंकि जो स्वार्थबुद्धि होते हैं, वे केवल अपना स्वार्थ पूरा करने के दूसरा कुछ भी नहीं जानते-मानते।

प्रश्न 773. चारवाकों का पोपों के विरुद्ध अश्वमेध, गोमेध, श्राद्ध, तर्पण आदि के विरुद्ध कैसा दर्शन था?

उत्तर-जो पशु मारकर अग्नि में होम करने से पशु स्वर्ग को जाता है तो यजमान आदि अपने पिता आदि को मारके स्वर्ग में क्यों नहीं भेजते। जो मरे हुए मनुष्यों की तृप्ति के लिए श्राद्ध व तर्पण होता है तो विदेश में जाने वाले मनुष्य को मार्ग का भोजन खाने-पीने के लिए बांधना व्यर्थ है। क्योंकि जब मृतक को श्राद्ध, तर्पण से अन्न-जल पहुँचता है तो जीते हुए परदेश में रहने वाले वा मार्ग में चलने हारों को घर में रसोई बनी हुई का पत्तल परोस, लोटा जल भरके उसके नाम पर रखने से क्यों नहीं पहुँचता? जो दूर देश अथवा दस हाथ दूर बैठे जीते हुए को दिया हुआ नहीं पहुँचता तो मरे हुए के पास किसी प्रकार नहीं पहुँच सकता।

प्रश्न 774. जैनों का आरम्भ कब और कैसे हुआ? उन्होंने वैदिक जनों के साथ कैसा व्यवहार किया?

उत्तर-कितने ही जो पर्वत, काशी, कन्नौज, पश्चिम, दक्षिण देश वाले थे, उन्होंने जैनों का मत स्वीकार नहीं किया था, वे जैनी वेद का अर्थ न जानकर बाहर की पोपलीला को भ्रांति से वेद पर मानकर वेदों की भी निन्दा करने लगे। उनके पठन-पाठन, यज्ञोपवीतादि और ब्रह्मचर्यादि नियमों को भी नाश किया। जहाँ जितने पुस्तक वेदादि के पाये नष्ट किये। आर्यों पर बहुत-सी राज़सत्ता भी चलाई, दु:ख दिया। जब उनको भय शंका न रही तब अपने मतवाले गृहस्थ और साधुओं की प्रतिष्ठा और वेदमार्गियों का अपमान और पक्षपात से दण्ड भी देने लगे। और आप सुख आराम और घमण्ड में आ, फूलकर फिरने लगे। ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यन्त अपने तीर्थंकरों की बड़ी-बड़ी मूर्तियां बनाकर पूजा करने लगे। परमेश्वर का मानना न्यून हुआ, पाषाणादि मूर्तिपूजा में लगे। ऐसा तीन सौ वर्ष पर्यन्त आर्यावर्त में जैनों का राज रहा। प्राय: आर्य लोग उनमें मिलकर वेदार्थ-ज्ञान से शून्य शूद्रप्राय: हो गये थे।

प्रश्न 775. मूर्तिपूजा कब से प्रारम्भ हुई?

उत्तर-पाषाणादि मूर्तिपूजा जैनियों से प्रचलित हुई। जैनी ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यन्त अपने तीर्थंकरों की बड़ी-बड़ी मूर्तिया बनाकर पूजा करने लगे।

प्रश्न 776. शंकराचार्य और जैनमत का शास्त्रार्थ कैसे हुआ?

उत्तर-बाईस सौ वर्ष हुए कि एक शंकराचार्य द्रविड़ देशोत्पन्न ब्राह्मण ब्रह्मचर्य से व्याकरणादि सब शास्त्रों को पढ़कर सोचने लगे कि अहह! सत्य आस्तिक वेद मत का छूटना और जैन नास्तिक मत का चलना बड़ी हानि की बात हुई है, इसको किसी प्रकार हटाना चाहिए। शंकराचार्य शास्त्र तो पढ़े ही थे, परन्तु जैनमत के भी पुस्तक पढ़े थे और उनकी युक्ति भी बहुत प्रबल थी। उन्होंने विचारा कि इनको किस प्रकार हटावें? निश्चय हुआ कि उपदेश और शास्त्रार्थ करने से ये लोग हटेंगे। ऐसा विचार कर उज्जैन नगरी में आये। वहाँ उस समय सुधन्वा जैनी राजा था, जो जैनियों के ग्रन्थ और कुछ संस्कृत भी पढ़ा था। वहाँ आकर वेद का उपदेश करने लगे और राजा से मिलकर कहा कि आप संस्कृत और जैनियों के भी ग्रन्थों को पढ़े हो और जैनमत को मानते हो, इसलिए मैं आपको कहता हूँ कि जैनियों के पण्डितों के साथ मेरा शास्त्रार्थ कराइये। इस प्रतिज्ञा पर, जो हारे सो जीतने वाले का मत स्वीकार कर ले और आप भी जीतने वाले का मत स्वीकार कीजिएगा।

यद्यपि सुधन्वा जैनमत में थे तथापि संस्कृत ग्रन्थ पढ़ने से उनकी बुद्धि में कुछ विद्या का प्रकाश था। इससे उनके मन में अत्यन्त पशुता नहीं छाई थी। क्योंकि जो विद्वान् होता है, वह सत्यासत्य की परीक्षा करके सत्य का ग्रहण और असत्य को छोड़ देता है। जब तक सुधन्वा राजा को बड़ा विद्वान् उपदेशक नहीं मिला था तब तक सन्देह में थे कि इनमें कौन-सा सत्य और कौन-सा असत्य है? जब शंकराचार्य की यह बात सुनी तब बड़ी प्रसन्नता के साथ बोले कि हम शास्त्रार्थ कराकर सत्यासत्य का निर्णय अवश्य करावेंगे।

क्रमशः अगले अंक में....

आर्यसमाज के नियमों की संक्षिप्त व्याख्या

❑ जगरूपसिंह छिक्कार, स्पेज परिवी सेक्टर-72 बी-103 फ्लोवर-10, गुरुग्राम-122001 (हरयाणा)

गतांक से आगे....

प्रभु तो हमारे साथ काम करता है। हम उसकी आज्ञा को नहीं सुनते। उसकी असीम करुणा है कि बुराई के समय भय, शङ्का और लज्जा उत्पन्न करके बुराई को न करने का संकेत करता है और शुभ कर्म के समय हर्ष और उत्साह जगाकर वैसा आचरण करने की प्रेरणा करता है। अत: प्रभु के साथ कार्य करते हुए वेदों के अर्थ आचरण से सिद्ध करो। तभी हम ऋषियों के ऋण से अनृण हो सकते हैं। शान्त और सुखी जीवन बिताने के लिए ही नहीं, अपितु जीवन के मुख्य लक्ष्य 'मुक्ति' के लिए मनुष्य को शुभकर्म करने चाहिएं। वेद-ज्ञान को आचरण में लाना ही सत्ययुग है।

4. सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।

व्याख्या-यही नियम है, सबसे बहुमूल्य विद्यारूपी रत्न। सत्यार्थप्रकाश के ऋषि ने आर्यसमाज के नियमों में 'सत्य' शब्द के अनुप्रास की भरमार की है। अत: इसे ध्यानपूर्वक ठीक-ठीक समझने की आवश्यकता है। 'सत्य' शब्द की व्युत्पत्ति सत् से की है, जिसका अर्थ है होना। जो है वह सत्य और जो नहीं है वह असत्य। परमात्मा ही तीनों कालों में एक रूप है। जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही जानना, मानना और बोलना तथा उसको आचरण में लाना सत्य है।

सत्य की पहचान-''वाणी ओर मन का अर्थ के अनुकूल होना, जैसा प्रमाणों से ज्ञात हुआ है वैसा ठीक वाणी और मन में रखना सत्य है। किसी को ज्ञान देने में वाणी न किसी को ठगती है, न भ्रम में डालती है, न किसी को हानि करती है, न किसी को दु:ख देती है, न निष्प्रयोजन जाती है और वाणी सबका कल्याण करती है तो वह सत्य है। सत्य बोलो, किन्तु मीठा बनाकर बोलो। तभी आपको यश मिलेगा अन्यथा लोग आप पर कठोरभाषी होने का अपयश लगायेंगे। सत्य वाणी होते हुए भी यदि उसके प्रयोग में प्राणियों को हानि पहुँचती है तो वह सत्य धर्म नहीं होगा, पाप ही होगा।'' इसलिए पूरी छानबीन करके सब प्राणियों की भलाई करने वाला सत्य बोलें। इसलिए मनुष्य को ऋत, हित और मीत गुण से युक्त होकर भाषा का प्रयोग करना चाहिए। ''मधुर भाषण एक छोटी-सी वस्तु है, किन्तु यह हृदय के गम्भीर कूप में गिराई जाती है। इसके परिणाम स्वरूप जो शुभ तथा प्रसन्नता उत्पन्न होती है उसमें एक अनूठा सौन्दर्य और माधुर्य होता है।'' सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं और झूठ से बढ़कर पाप नहीं। अत: असत्य को त्यागकर अपने-आपसे अपना उद्धार करें। हम वाणी को अपने वश में रख के उसका इस प्रकार प्रयोग करें कि सब ओर आनन्द और माधुर्य में वृद्धि हो।

5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिएं।

व्याख्या-सनातन वैदिक धर्म सृष्टि का अटल धर्म है। सनातन-सदा रहने वाला, अनादि कालीन कहते हैं और तो भी यह आज प्रतिदिन फिर-फिर नया होता है। एक-दूसरे के रूपों में, समान रूपों में ही ये दिन-रात सदा उत्पन्न होते रहते हैं। जो नित नया नहीं होता, वह सनातन नहीं हो सकता, वह जीर्ण हो गया, पुराना हो गया। वह आज चलने योग्य नहीं (out of date) रहा।

भूमण्डल के उत्तम उपदेशक जगद्गुरु दयानन्द जी के इस कथन से यह सुतरां सिद्ध है कि जो वेदाज्ञा है वह धर्म और जो वेदविरुद्ध है, वह अधर्म। धर्म के विषय में वेद ही प्रमाण है। धर्म का आधार विज्ञान, अर्थात् प्राकृतिक नियम, युक्ति और तर्क ही है। धर्म का आचरण मनुष्य को उत्तरोत्तर शुद्ध बनाकर मोक्ष का अधिकारी बनाता है। अत: संसार के संताप से बचाने के लिए आर्यसमाज प्रचार करता है कि धर्म के नाम पर बने ये सङ्कीर्ण दायरे समाप्त हों और सारी मानव जाति एक परिवार के समान परस्पर एक-दूसरे की सहायक बनकर अपने जीवन के लक्ष्य तक पहुँचे।

इस नियम में सत्य का तात्पर्य यह है कि आज संसार में श्रद्धा के विषय में बहुत अज्ञान है। इसका निरन्तर संतुलित विचार देकर समाधान करना चाहिए। श्रद्धा का वास्तविक रूप नास्तिकता और अन्ध-श्रद्धा दोनों के बीच में है। निर्णीत सत्य के ऊपर भी आचरण न करना नास्तिकता है और आंख मींचकर प्रत्येक बात को माथा झुकाकर मान

लेना और करने लग जाना अन्ध-श्रद्धा है। ये दोनों ही मानव समाज के लिए हानिप्रद हैं। ''निर्णीत सत्य को आचरण में लाने की प्रबल इच्छा और हूक ही श्रद्धा है।'' अतः महान् परमात्मा की वेदवाणी से सत्य भावना को ही हम अपने मस्तिष्क में धारण करें। श्रद्धा ही धर्म की चेतना है जो निश्चित रूप से आत्मा की रक्षा करती है। यदि मनुष्य धर्महीन है तो पशुओं से भी कहीं अधिक निकृष्ट है।

6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

व्याख्या-सनातन वैदिक संस्कृति में जीवन यापन का जो उच्च आदर्श रखा है वह समस्त भूमण्डल को स्वर्गधाम बनाने वाला है। वर्ण-धर्म तथा आश्रम-धर्म समाज में बढ़ती बुराइयों तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य को जड़ से उखाड़कर शान्ति-स्थापना के लिए निष्फल न जाने वाली दिव्यौषध है। जो यज्ञरूपी नाव पर चढ़ने में सफल होते हैं, उन्हीं में दिव्य गुण आते हैं और वे ही महान् कार्य करते हैं। जो इस नाव पर नहीं चढ़ पाते, अर्थात् संसार के विषय-विकारों में लिप्त रहते हैं, वे किसका उपकार करें। हमें प्रकृति से ऊहा लेकर संसार में परोपकारी कार्य करने चाहियें। हमें प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए कि मेरे सद्गुण मेरे जीवन में विकसित होकर मेरे जीवन को यज्ञमय बना दें ताकि मैं अपना और समाज का भला कर सकूँ। मेरे सङ्कल्प सत्य हों। मैं किसी भी अवस्था में पापाचरण न करूँ। मुझे मृत्यु स्वीकार हो, परन्तु पापमय जीवन नहीं।

अतः मनुष्य को अपना आचार श्रेष्ठ और धर्मानुसार बनाना चाहिए, फिर संसार में रक्षकों की कमी नहीं रहती। प्रत्येक मनुष्य को ऐसा आचरण बनाना चाहिए कि संसार के पूजनीय श्रेष्ठ पुरुष-स्त्रियाँ उसके उदात्त चरित्र से उसकी रक्षा करें। मनुष्य को जानी हुई अच्छाई और सच्चाई के प्रचार के लिए समय निकालना चाहिए। इस शुभ कर्म से लोक और परलोक दोनों बनते हैं। पवित्र विचार, आर्षग्रन्थों का स्वाध्याय, परस्त्री को सगी माँ, बहिन और बेटी की दृष्टि से देखना हमारी महती ख्याति है।

7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

व्याख्या-यह संसार क्या है? इसे तुम अपने व्यवहार से जैसा बनाते हो, यह वैसा बन जाता है। सार यह है कि मनुष्य का सारा क्रियाकलाप यज्ञमय होना चाहिये। यदि यज्ञ की भावना न रही तो मनुष्य के सब काम व्यक्ति और समाज में राजसी भावनाओं के द्वारा विषय-विकार और सङ्घर्ष को जन्म देंगे। यदि आप किसी से घृणा करेंगे तो प्रतिक्रिया स्वरूप बदले में आप भी घृणा प्राप्त करेंगे। इसलिए संसार को सुखमय बनाने के लिए अपने व्यवहार को सत्य बनाओ। प्रत्येक मनुष्य को संसार के समक्ष न्यायपूर्ण और उत्तम व्यवहार ही उपस्थित करना चाहिये। साधक को समाज में सभी मिलेंगे, पर किससे कैसे निपटें कि सांप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे? इस सम्बन्ध में महर्षि पतञ्जलि ने कहा है-''जो संसार में तुम्हें सुखी प्रतीत हो उनसे मैत्रीभाव रखो, उनकी सुख-सामग्री देखकर प्रसन्न होवो। दुःखियों को देखकर आपका चित्त द्रवित होना चाहिए और उनके कष्ट निवारण में सहयोग करना चाहिए। पुण्यात्माओं के पवित्र कर्मों के कारण समाज में उनके यश और सम्मान को देखकर मुदित होना चाहिए। समाज में व्यसनी और कुमार्गगामियों के प्रति उपेक्षा का भाव रखिये। ऐसों से शत्रुता और मित्रता दोनों ही बुरी हैं।'' भद्दे हास्य-विनोद से बचना, दूसरों की स्वच्छ बढ़ती हुई कीर्ति नदी को निन्दा की धूल डालकर गंदला मत करो। प्राचीन आर्यों की परम्परा का पालन करते हुए राष्ट्र के धर्मात्मा, योगी तथा मनीषी विद्वानों के पावन चरणों में आकर सुन्दर, शान्त स्वभाव से श्रद्धापूर्वक उनका आदर भाव करो।

8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

व्याख्या-मनुष्य को पतन की ओर ले जाने वाली राजसी और तामसी वृत्तियों को शास्त्रकारों ने अविद्या कहा है। अर्थात् जो दुःखों को लाद दे वह अविद्या है। अविद्या विषय-विकार एवं संघर्ष पैदा करती है।

अविद्या के लक्षण-अनित्य, अशुचि, दुःख और अनात्मा में क्रमशः। नित्य, शुचि, सुख और आत्मा का मानना अविद्या है। अविद्या वह मिथ्या ज्ञान है, जो पदार्थ के वास्तविक स्वरूप को प्रकाशित नहीं करता। जैसे रस्सी को रस्सी जाना जाये विद्या है और रस्सी को सांप जाना जाये अविद्या है। अविद्या से पिंड छुड़ाये बिना मनुष्य, मनुष्य नहीं बन सकता।

विद्या की परिभाषा-शास्त्रकारों ने विद्या की परिभाषा करके बताया है कि ''विद्या वास्तव में वह है जो दु:खों से छुड़ा दे।'' विद्या के लिए प्रसिद्ध है कि विद्या विनय देती है।

विद्या के लक्षण-अविद्या के चार अङ्गों-अनित्य, अशुचि, दु:ख और अनात्म में तात्त्विक बुद्धि से यथावत् देखना विद्या के लक्षण हैं। विद्या का प्रथम लक्षण-नम्रता। विद्या वह सत्य ज्ञान है जो पदार्थ के वास्तविक स्वरूप को प्रकाशित करता है।

जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तरके विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है। इसलिए हमें आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक दु:खों से छुटकारा पाने के लिए अत्यन्त पुरुषार्थ करना चाहिये।

9. प्रत्येक को अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

व्याख्या-इस नियम में तृतीयाश्रम (वानप्रस्थ) में प्रवेश में असमर्थ वृद्धों के पाँच मुख्य कर्त्तव्य बताये गये हैं। वेद कहता है कि इससे उसके नि:श्रेयस् में कोई बाधा नहीं है। अत: वेद ने प्रत्येक वृद्ध गृहस्थ को पहला कर्त्तव्य बताया-भूखे को आदर-भाव से भोजन दो। दूसरा कर्त्तव्य है-जो साधनों के अभाव में दु:खी हैं, इसी कारण से कुछ नहीं कर पाते, ऐसे अभावग्रस्त व्यक्तियों को कुछ कारोबार के साधन जुटा देने चाहियें, शेष काम तो वे स्वयं कर लेंगे। तीसरा कर्त्तव्य है-जो दृष्टि से वंचित हो गए हैं, उनके कष्ट समझकर उनकी सहायता करना। ऐसे व्यक्तियों की भीड़भाड़ भरे मार्ग में सड़क पार ही करा दें। असमर्थों को चश्मे लगवाने में सहायता करनी चाहिए। चौथा कर्त्तव्य है-जो पाप रोगी हैं, अपङ्ग हैं, कुष्ठादि व्याधियों से पीड़ित हैं, उसकी सहायता करना हमारा पवित्र कर्त्तव्य है। अत: पांचवां कर्त्तव्य-वेद ने रोगियों की औषधोपचार से सेवा करना बताया। जो गृहस्थ अपने वार्धक्य को इस प्रकार बिताते हैं, उनका पुण्य वानप्रस्थ से किसी प्रकार कम नहीं है।

10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

व्याख्या-मानव की ज्ञानपिपासा को शान्त करने के लिए वेद से बढ़कर अन्य कोई साधन नहीं है। अत: मनुष्य को समाज सुधार के कामों में समय निकालना चाहिए। पृथ्वी की मान-मर्यादा को सुरक्षित रखने वाली ये सात शक्तियां हैं। गौ, ब्राह्मण, वेद, पतिव्रता देवियां, सत्यवक्ता, निर्लोभी और त्यागी इन सात के कंधों पर पृथ्वी की प्रतिष्ठा सुरक्षित रहती है। अत: भारतवर्ष के प्रत्येक नागरिक एवं स्त्रियों को इस दायित्व को निभाने में परिपक्व होना चाहिये, इससे बढ़कर मातृभूमि की पवित्र सेवा नहीं।

वेद में चार महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्यों की ओर मानव-समाज का ध्यान आकृष्ट कर जीवन को सुखी बनाने के लिए मृत्युपर्यन्त उन पर आचरण करने का परामर्श दिया है। उनमें पहला है-परिश्रम के पश्चात् जो वस्तु आपके हिस्से में आती है, उसे अमृत समझो और उसी को ग्रहण करो। प्रत्येक के हृदय में शुभकर्म करने की प्रेरणा करो। दूसरा आदेश है-तुम्हारा प्रत्येक काम सत्य की पहचान करके उसके ऊपर आचरण करने का है। जो शुभकर्म करने वाले हैं, उनके उत्साह को बढ़ाओ। मनीषी अनुभवियों से मधुर भाषण की शिक्षा लेकर हमें इस प्रकार वाणी बोलनी चाहिए, जिसे सुनकर व्याकुल और विक्षुब्ध व्यक्ति भी शान्तिलाभ करे। तीसरा है-जो-जो हम जानते जायें उन पर पूरी आस्था दृढ़ता के साथ आचरण करना चाहिए। वेद में कहा-तुम लोग दीक्षा से सुरक्षित रहने वाले हो। शब्दज्ञान का नाम शिक्षा है। वह शब्दमय ज्ञान आचरण के माध्यम से हमारे आन्तरिक जीवन का अंग बनता है, तो दीक्षा कहा जाता है। अत: दीक्षा ही तत्त्व वस्तु है और निश्चित रूप से आत्मा की रक्षा करती है। अत: भूले-भटकों को मार्ग बतावें। वेद की चौथी बात है-सबका जीवन याज्ञिक भावना में सब प्रकार से निहित हो। यह जड़ और चेतन संसार एक दूसरे के सहयोग और सङ्गतिकरण से चल रहा है। यदि इस शृंखला की एक कड़ी भी टूट जाये तो सब काम ठप्प हो जायेंगे। आज राष्ट्र में आस्तिकता और धार्मिकता की अत्यन्त आवश्यकता है, इस युग के बिना समाज के लोगों में आधार और व्यवहार की पवित्रता नहीं आती। अत: प्रभु के दिव्य गुणों युक्त, आर्यसमाज के नियमों के व्रताचरण से मोक्ष पद के अधिकारी बनो। इनका आचरण सार्वभौम महाव्रत है। हमें इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह मानव-शरीर मिला है।

देश पर बलिदान होने वाले आर्य राष्ट्रनायकों को विनम्र श्रद्धांजलि

❑ संजय शास्त्री विद्यावाचस्पति, कर्नल हाउस नजदीक रामलाल चौक, पानीपत 9729805075

जब अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त हमारे देश में चारों ओर हाहाकार मची हुई थी, तो ऐसे में वीरभूमि ने अनेक

वीर सपूत पैदा किए जिन्होंने अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलाने की खातिर अनेक संघर्षपूर्ण प्रयत्न करते हुए हंसते-हंसते देश की खातिर प्राण न्यौछावर कर दिए।

इन्हीं में ये तीन पक्के क्रान्तिकारी दोस्त थे, शहदे आजम सरदार भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव, इन तीनों ने अपने प्रगतिशील और क्रान्तिकारी विचारों से भारत के नौजवानों में स्वतन्त्रता के प्रति ऐसी दीवानगी पैदा कर दी कि अंग्रेज सरकार को डर लगने लगा था कि कहीं उन्हें यह देश छोड़कर भागना न पड़ जाए, तीनों ने ब्रिटिश सरकार की नाक में इतना दम कर दिया था जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 24 मार्च 1931 को तीनों को एक साथ फांसी की सजा सुना दी गई। इनकी फांसी की बात सुनकर लोग इतने भड़क चुके थे कि उन्होंने भारी भीड़ के रूप में उस जेल को घेर लिया था।

अंग्रेज भयभीत थे कि कहीं विद्रोह न हो जाए। इसी को मद्देनजर रखते हुए उन्होंने एक दिन पहले यानी 23 मार्च, 1931 की रात को ही भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दे दी और चोरी-छिपे उनके शवों को जंगल में लेजाकर जला दिया। जब लोगों को इस बात का पता चला तो वे गुस्से में उधर भागे चले जाए। अपनी जान और सबूत मिटाने के लिए अंग्रेजों ने उन वीरों की अधजली लाशों को बड़ी बेरहमी से नदी में फिकवा दिया। छोटी उम्र में आजादी के दीवाने तीनों युवा अपने देश पर कुर्बान हो गए। आज भी ये तीनों युवापीढ़ी के आदर्श हैं।

शहीदे आजम भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु इन तीनों की शहादत को पूरा संसार सम्मान की नजर से देखता है और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में यह एक तरफ भगतसिंह और सुखदेव कालेज के युवा स्टूडेंट्स के रूप में भारत को आजाद कराने का सपना पाले थे, वहीं दूसरी ओर राजगुरु विद्याध्ययन के साथ कसरत के काफी शौकीन थे और उनका निशाना भी काफी तेज था। वे सब चन्द्रशेखर आजाद के विचारों से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने क्रान्तिकारी दल में शामिल होकर अपना विशेष स्थान बना लिया था, इस क्रान्तिकारी दल का एक ही उद्देश्य था सेवा और त्याग की भावना मन में लिए देश पर प्राण न्यौछावर कर सकने वाले नौजवानों को तैयार करना।

लाला लाजपतराय जी की मौत का बदला लेने के लिए 17 दिसंबर 1928 को भगतसिंह और राजगुरु ने अंग्रेज अफसर सांडर्स पर गोलियां चलाईं, हालांकि वे रक्तपात के पक्ष में नहीं थे, लेकिन अंग्रेजों के अत्याचारों और मजदूर विरोधी नीतियों ने उनके भीतर आक्रोश भड़का दिया था। अंग्रेजों को यह जताने के लिए कि अब उनके अत्याचारों से तंग आकर पूरा भारत जाग उठा है। भगतसिंह ने केन्द्रीय असैम्बली में बम फेकने की योजना बनाई, वह यह भी चाहते थे कि किसी भी तरह का खून-खराबा न हो। इस काम के लिए उनके दल की सर्वसम्मति से भगतसिंह व बटुकेश्वर दत्त को इस काम के लिए चुना गया।

इस कार्यक्रम के अनुसार 3 अप्रैल 1929 को केन्द्रीय असैम्बली में ऐसी जगह बम फेके गए थे जहाँ कोई मौजूद नहीं था। भगतसिंह चाहते तो वहाँ से भाग सकते थे, लेकिन वहीं पर अपनी गिरफ्तारी दी। इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगाते हुए उन्होंने कई पर्चे हवा में उछाले ताकि लोगों तक उनका संदेश पहुँच सके। वह एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे जो सभी सम्बन्ध समानता पर आधारित हो व हरेक को अपनी मेहनत का पूरा हक मिले। अक्तूबर 1929 को भगत सिंह को जेल से एक पत्र भारत के युवाओं के नाम लिखा जिसमें उन्हें संदेश दिया गया था कि स्वतन्त्रता प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है। जेल में इन तीनों और साथियों पर अत्याचार किये गए। लम्बी चली इनकी भूख हड़ताल को तोड़ने के लिए अंग्रेजों ने अमानवीय यातनाएँ दीं, लेकिन वे विफल रहे। छोटी आयु में ही देश पर जान कुर्बान करने वाले इन महान् देशभक्त क्रान्तिकारी शहीदों को शत-शत नमन। इन्हीं शब्दों के साथ अपनी लेखनी को विश्राम की ओर ले जाता हूँ।

वेद–दयानन्द और ब्राह्मणवाद

❑ राहुल आर्य, गांव व डाक० नयाबांस (रोहतक) फोन नं० 8571050423

'आर्य प्रतिनिधि' पत्रिका में लेख लिखना मेरे लिए बड़े गर्व की विषय होता है। आज वेद–दयानन्द और ब्राह्मणवाद शीर्षक के माध्यम से तनिक सा प्रयास महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उज्ज्वल कीर्तिमानों को स्मरण करने का प्रयास होगा।

सायण, उव्वट, महीधर जैसे लोगों ने वेदों का विपरीत भाष्य कर वेदों के बारे में अनेक गलत धारणाएं प्रचलित

करवाने में अपना योगदान दिया। कालान्तर में पश्चिमी लेखकों ने सुनियोजित षड्यंत्रों के तहत वेदों के बारे में अनाप–शनाप लिखना आरम्भ किया। इस षड्यन्त्र के मसीहाओं में फडरिक मैक्समूलर, विल्सन ग्रिफिथ, प्रो० मक्डानल आदि प्रमुख थे। इन पश्चिमी लेखकों की मान्यता था कि भारतीय समाज का आधार वेद है,.सो इस आधार को दूषित कर दिया जाये तो इमारत स्वयं व स्वयं दूषित हो जाएगी। किन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस षड्यन्त्र को पहचान कर एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया कि वह उदाहरण सदा–सदा के लिए अमर हो गया। उन्होंने मैक्समूलर के विषय में कहा कि जहाँ पेड़ नहीं होता वहाँ एरण्ड को ही पेड़ मान लिया जाता है। स्वामी दयानन्द के मानसपुत्र गुरुदत्त विद्यार्थी ने मैक्समूलर के वेद अनुवाद के विषय में कहा कि मैक्समूलर का अनुवाद झूठा है। सायण जैसे लोगों ने वेदों को अपनी वासनाओं तृष्णाओं की पूर्ति का माध्यम बना डाला। उनकी यह मानसिकता रही कि तुम स्वयं की बुराइयों को वेदों में मिश्रित करके उचित ठहरा दो। इस प्रकार ईश्वरकृत वेदों में मिश्रण करके समाज को दिग्भ्रमित करने का कुचक्र रचा गया।

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृतः।
उरु तदस्य यदैश्यः पदभ्यां शूद्रो अजायत॥

जैसे श्लोकों के विपरीत अर्थ निकालकर प्रचारित किए जाने लगे। इस भयंकर अंधियारी रात में एक मसीहा मशाल लेकर निकला जिसका नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती था। स्वामी जी ने वेदों का वह अर्थ बताया जो ईश्वरकृत था। सायण, उव्वट, महीधर, मैक्समूलर, ग्रिफिथ, मैक्डानल का सारा षड्यंत्र इस देव ने वाष्प की भांति उड़ा दिया। मैक्समूलर जैसे सूर्यों को स्वामी जी ने शास्त्रार्थ की चुनौती तक दी किन्तु चोर के पांव कहाँ होते हैं। मैक्समूलर को कोई उत्तर देते नहीं बना तो देव दयानन्द की बुराई शुरू कर दी। स्वामी जी ने नारा दिया कि विदेशी राज कितना ही अच्छा हो मगर स्वदेशी से अच्छा नहीं हो सकता। स्वामी जी ने उद्घोष किया स्वराज का किन्तु दुर्भाग्य कुछ दुष्टों ने इस स्वराज के नारे को चुराकर स्वयं की मोहर लगा दी। जब देव दयानन्द ने स्वराज और आर्यसमाज का बिगुल फूंका तो विदेशी आक्रान्ताओं की चूलें हिलने लगी और दयानन्द नामक क्रान्ति को ठण्डा करने की योजनाएँ लंदन में बनने लगीं और अन्त में दुश्मन इस मशाल को बुझाने में कामयाब रहे। मगर जब तक एक मशाल से सहस्त्रों मशालें जलाकर देवदयानन्द अपना कार्य कर चुके थे।

स्वामी जी ने 1863 में कुंभ में जाकर सबसे ऊँचा मचान लगाकर ब्राह्मणवाद के तंतुओं पर वार किया। ब्राह्मणवाद के संरक्षक तिलमिला उठे। स्वामी जी ने आग से खेलते हुए कहा कि तुम्हारा धर्म झूठा है जो नारी और शूद्र को शिक्षा देने से मना करता है। उन्होंने **'स्त्रीशूद्रो नाधीयातामिति श्रुते'** का प्रति उत्तर वेद के इस सूत्र से दिया–

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय॥

ब्राह्मणवाद की औषधि मूर्तिपूजा पर उन्होंने वेद का उदाहरण **'न तस्य प्रतिमा अस्ति'** प्रस्तुत कर विरोधियों को पस्त किया। स्वामी जी ने कहा कि जाति जन्मना नहीं कर्मणा होनी चाहिए। अपनी बात को उन्होंने मनुस्मृति के माध्यम से सिद्ध किया कि–

शूद्रो ब्राह्मणतां एति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियात् जातमेव तु विधान वैश्या तथैव च॥

अन्त में लिखना चाहता हूँ कि स्वामी जी चाहते तो स्वयं को औरों की भांति स्वयम्भू परमात्मा घोषित करके इस भारत के सबसे बड़े खुदा बन सकते थे, किन्तु उन्होंने ऐसा न करके कहा कि दयानन्द सत्य के साथ कभी समझौता नहीं करेगा और सत्य सनातन है मेरा खुद का नहीं है। परमात्मा पेट से पैदा नहीं होता वह तो सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है।

राष्ट्र की सारी समस्याओं का अन्त उन्होंने एक ही वाक्य में बता दिया। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण भारत को राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक रूप से एक सूत्र में बांध दो और वह सूत्र वैदिक हो। भाइयों महर्षि दयानन्द के इस स्वप्न यज्ञ में आपकी आहुति निर्णायक होगी।

आर्यों की धरती आर्यों का धर्म

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्यकुल में ही हुए थे। इनमें से सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व, यौनवाश्व, वदधयश्व, अश्वपति, शशबिन्धु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीश, ननक्तु, सर्याति, ययाति,

अनरन्य, अक्षसेन, मरुत्त और भरत आदि सार्वभौम चक्रवर्ती राजा हुए हैं। उनके हृदयों में वैदिक धर्म का प्रकाश था, वेदाचरण करते थे, वेद के अनुसार आचरण करने वाले सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव रखते हुए सम्पूर्ण विश्व की श्रेष्ठता की कामना करते हैं, वही भावना आज भी आर्यों की है।

भारत भूमि पर जब-जब भी संकट आया शत्रुओं से आर्यों ने संघर्ष ही नहीं अपने प्राण भी दिए यह आर्यों की रीति पुरातन काल से चली आ रही है। आर्यों का इतिहास बहुत बड़ा है। शब्दों में एक साथ लिखना कठिन है।

स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य क्रान्तिकारियों की अमरगाथा को भुलाया नहीं जा सकता। रासबिहारी बोस, वसन्त कुमार विश्वास, प्रताप सिंह बारहट इनके चाचा जोरावर सिंह बारहट ने योजना बनाकर 23 दिसम्बर 1912 को भव्य जुलूस में हाथी पर सवार वायसराय हार्डिंग पर बम फेंक कर दिल्ली में यूनियन जैक लहराए जाने का विरोध कर दिखाया था कि भारत की जनता अंग्रेजों का विरोध कर रही है, जबकि यूनियन जैक व वायसराय के साथ अनेक राजे-महाराजे भी थे परन्तु क्रान्तिकारियों ने योजनाबद्ध हो वायसराय हार्डिंग पर बम फेंका, बम वायसराय के हाथी पर गिरा जिसमें एक एडिकांग मारा गया हाथी भाग छूटा। यह अंग्रेजों को दिल्ली पर यूनियन जैक लहराने के विरुद्ध चेतावनी आर्यों द्वारा ही दी गई यह क्रान्तिकारी कोई परवाह किए बिना देशहित में जो करना होता था करते थे।

एक बार लार्ड कर्जन का भव्य जुलूस व दरबार लगना था। राजे-रजवाड़ों को निमन्त्रण दिए गए। मेवाड़ के महाराजा फतेह सिंह जो महाराणा प्रताप के वंशज थे, उन्हें भी विशेष आमन्त्रण दिया गया। महाराणा ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। यह निमन्त्रण ठाकुर केसरी सिंह को अच्छा न लगा उनका हृदय दु:ख से भर गया कि स्वाभिमानी महाराणा प्रताप जीवन भर शत्रु के सम्मुख झुका नहीं, शत्रु से कभी हार न मानी, सदैव शत्रु के सामने डटा रहा। ऐसे स्वाभिमानी महाराणा प्रताप के वंशज ने निमन्त्रण कैसे स्वीकार कर लिया? ठाकुर केसरीसिंह बारहट को घोर चिन्ता हुई। उन्हें एक युक्ति सुझाई दी। उन्होंने सोरठे (कविता) लिखकर महाराणा के पास पहुँचाए भले ही महाराणा कुपित हो जायें उन्हें इसकी इसकी चिन्ता न थी। देश स्वाभिमान हेतु उन्होंने ऐसा किया। सोरठों में उनके वीर वंशजों के राष्ट्र स्वाभिमान, वीरताओं व गौरव गरिमा का प्रकाश था।

जब महर्षि दयानन्द के शिष्य ठाकुर केसरी सिंह के सोरठे महाराणा फतेहसिंह को मिले, उनकी स्पेशल ट्रेन चित्तौड़गढ़ से आगे निकल चुकी थी। इन सोरठों से महाराणा फतेहसिंह के हृदय पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह ट्रेन से नीचे ही नहीं उतरे और अपनी स्पेशल ट्रेन को वापिस उदयपुर लौटने की आज्ञा दे दी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने देशहित में वैदिक धर्म तथा उसमें भी विशेष राजधर्मविषयक अनेक उपदेश वहाँ के अनेक राजा-महाराजाओं को दिए। उदयपुर में महाराणा सज्जनसिंह को मनुस्मृति के राजधर्म सम्बन्धी विषय, महाभारत के उद्योगपर्व एवं विदुरनीति के प्रकरण सुनाए थे। इस कारण उदयपुर में प्रजा व शासन में वैदिक धर्म की विचारधारा बन गई थी। शासन कार्यों में सुधार हुआ था।

सरदारगढ़ के ठाकुर मनोहरसिंह की एक शंका का समाधान करते हुए ऋषि दयानन्द ने कहा था कि सेवक को स्वामी की उन्हीं आज्ञाओं का पालन करना चाहिए जो न्याय व धर्म के अनुकूल हो।

महर्षि दयानन्द के उपदेशों का राजाओं के हृदय पर भी प्रभाव हुआ उनके उपदेशों से प्रभावित होकर महाराणा सज्जनसिंह, महाराणा फतेहसिंह, शाहपुरा के स्वामी नाहरसिंह ऋषि के अनुयायी रहे।

राजाधिराज उम्मेदसिंह ने वृद्धावस्था आने पर शासन का त्याग किया और वैदिक धर्म को मानते हुए वानप्रस्थी

हो गए। जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह व मुख्य प्रशासक प्रतापसिंह पर भी महर्षि वैदिक शिक्षाओं का प्रभाव था।

राजा का प्रजा पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा आचरण करती है। अत: राजा का आचरण अत्युत्तम होना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने राजाओं-महाराजाओं से लेकर प्रजा तक को वैदिक धर्म का उपदेश देकर राष्ट्र के प्रति जाग्रत करने का पूरा प्रयत्न किया। यह वह समय था जब भारत माता परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी थी। अंग्रेज चालाकी से भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित करने में लगे हुए थे। राजा-महाराजा भी अंग्रेजों के बाहुपाश में समाहित होते जा रहे थे। समाज अनेक बुराइयों में जकड़ा था। सतीप्रथा, बालविवाह, भूत-प्रेत जैसी अनेक कुप्रथाएँ फैली थी। उधर अंग्रेज हिन्दुओं का मत परिवर्तन कराने में लगे हुए थे। मठाधीश, पुजारी, पण्डित, प्रजा में वेदविरुद्ध मान्यताओं को बढ़ावा दे रहे थे। उस समय यह महर्षि के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य था।

विश्व में भारत वैदिक शिक्षा का केन्द्र रहा था। इसीलिए गौरवशाली था। आचरण का महत्त्व था। गुरुकुलों कीशिक्षा थी, जिस पर चलकर उन्नति हुई। वेदविद्या छोड़कर हम अवनत होते गए फिर परतन्त्र हो गए।

आज हमें अपने पुरातन गौरव को जानना होगा। उस भारत को जानना होगा जहाँ ऋषि गौतम, कणाद, याज्ञवल्क्य, विश्वामित्र हुए। चाणक्य, विदुर जैसे कुशल नीतिज्ञ हुए। अर्जुन जैसे बलशाली, राम जैसे मर्यादावान, श्रीकृष्ण जैसे योगेश्वर हुए। हमें आज महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्य को समझना होगा। वेदमार्ग पर चलेंगे तभी आर्य बनेंगे और आर्य ही राष्ट्रविरोधी, समाज विरोधी ताकतों व बुराइयों तथा अन्याय से लड़ सकता है। भारत का खोया गौरव पुन: वापिस ला सकता है।

आर्यसमाज में गुटबाजी क्यों?

वेद वही उपवेद वही ऋषियों ने कही फिर शंका कैसी?
वेदान्त वही सिद्धान्त वही ऋषि दयानन्द ने कही वैसी की वैसी॥

पाँच सहस्र वर्षों से अंधकार यहाँ छाया था।
हाहाकार सुनकर मानव की देवदयानन्द आया था।
पाखण्डियों ने वेदों को गीत गडरियों के बताया था।
महीधर सायण उव्वट ने अश्लील अर्थ लगाया था।
नहीं समझा वेद, नहीं मिटा उनका भेद, उनकी रही मनसा जैसी।
वेद वही उपवेद वही ऋषियों ने कही फिर शंका कैसी॥ 1॥

सृष्टि के आदि में चार ऋषियों को ईश्वर ने ज्ञान दिया था।
लगा के ध्यान वेद को जान उन ऋषियों ने उपदेश किया था।
पुण्य जन्मों का पुण्य लेकर ऋषि दयानन्द का आना हुआ था।
योग-साधना समाधिस्थ होकर वेदों का उत्तम भाष्य किया था।
यम वही नियम वही कायम वही, फिर ये दशा बिगड़ी क्यों ऐसी।
वेद वही उपवेद वही ऋषियों ने कही फिर शंका कैसी॥ 2॥

अधर्म, अन्याय, अंधकार, दुराचार यहाँ छाया था।
झाड़ फूँक गंडा ताबीज भय भूत प्रेत का साया था।
करुण विलाप नारी का सुन ऋषि दयानन्द रोया था।
जर्जर समाज की दशा देख सुख-चैन अपना खोया था।
ऋषिराज वही आर्यसमाज वही, फिर आज ये निराशा कैसी।
वेद वही उपवेद वही ऋषियों ने कही फिर शंका कैसी॥ 3॥

नहीं छल प्रपंच यहां, नहीं कोई पंच यहाँ सब सदस्य बराबर।
वेद शाश्वत नियम यहाँ, सब कुछ बात स्पष्ट यहाँ पर।
वेद से बढ़कर ज्ञान नहीं, कहीं भी इस धरा पर।
आर्यसमाज में गुटबाजी क्यों? यह बात गलत सरासर।
रहें छल से रहित आत्मबल सहित, न हों विचलित धारणा बने गिरि जैसी।
वेद वही उपवेद वही ऋषियों ने कही फिर शंका कैसी॥ 4॥

सब पढ़ें वेद मिटें मर्म भेद, सब मिलकर आगे बढ़ें।
मिटा मन का मैल, करे आपसे में मेल, सुपथ पर हम बढ़ें।
पढ़ सत्यार्थप्रकाश कर जीवन में प्रकाश, उन्नति के शिखर चढ़ें।
कहा ऋषि का मान, जगा निज स्वाभिमान, अच्छे संस्कार गढ़ें।
हम करें प्रण नित्य करें सन्ध्या हवन, स्वाध्याय मनन से नहीं रहेगी स्थिति ऐसी।
वेद वही उपवेद वही ऋषियों ने कही फिर शंका कैसी॥ 5॥

–देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, 725, सै०-4, रेवाड़ी,
मो० नं० 9416337609

पंजाब में आर्यसमाज

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

गतांक से आगे....

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पैतृक गाँव में प्रचार के बाद हम उनके ननिहाल लताला ग्राम में पहुँचे। यहाँ स्वामी

स्वतन्त्रानन्द की यादों के साथ शहीद घुन्नासिंह की यादें जुड़ी हैं। यहाँ के श्री घुन्नासिंह अत्यन्त श्रद्धालु आर्य बने थे। बालकों की शिक्षा, विवाह में आर्य परम्पराओं के निर्वहन के साथ-साथ गाँव में कन्या पाठशाला भी खुलवाई। द्वेषियों ने षड्यन्त्र रचकर उनकी हत्या करवा दी थी। वहाँ गाँव में एक बड़े वृक्ष के नीचे, बड़े दरवाजे के पास इस विषय में चर्चा की व प्रचार की इच्छा व्यक्त की। पास ही एक बड़े कक्ष में कुछ लोग बैठकर ताश खेल रहे थे, उनको भी तैयार किया। एक बुजुर्ग से शहीद घुन्नासिंह के पोते श्री जगरूप का भी पता मिल गया। फोन पर सम्पर्क से वे भी आ गए। उनसे मिलने पर उत्साह बढ़ गया। प्रवचन व भजन के माध्यम से बड़ा सुन्दर प्रचार हुआ। उसी दोपहर भैणी रोडा पहुँच गए।

वहाँ के एक श्री हरिसिंह का इतिहास श्रीयुत राजेन्द्र 'जिज्ञासु' के साहित्य में पढ़ रखा था। ये पवित्र आचरण वाले सत्यवादी आर्य मिशनरी थे। गाँव में धर्मशाला पर वृक्ष के नीचे कुछ व्यक्ति बैठे थे। हरयाणा में जहाँ सामूहिक चर्चा आदि के स्थान को चौपाल कहते हैं, वहाँ इसे धर्मशाला बताया गया। वहाँ पूछा तो श्री हरिसिंह के विषय में जानकारी नहीं मिली। गाँव के सरपंच के साथ काफी संख्या में लोग एकत्रित हो गए। प्रवचन-भजन के माध्यम से प्रचार हुआ। वैदिक धर्म की विशेषता, वर्तमान में आपसी फूट डालने के लिए चल रहे षड्यन्त्रों के बारे में बताने के साथ-साथ श्री हरिसिंह के जीवन की प्रेरणापरक घटनाओं पर भी प्रकाश डाला। उस समय प्रचार के बाद हमारे साथियों को एक लगभग 50 वर्ष की आयु के व्यक्ति मिले और उनको बताया कि उनके दादा सम्पूर्ण सिंह आर्य थे व यज्ञ करते थे। मैंने उनको बताया कि इन्हीं सम्पूर्ण सिंह के चाचा तो श्री हरिसिंह थे, ऐसा मैंने पढ़ा है। हरिसिंह के कोई सन्तान नहीं थी। उस गाँव के एक श्रद्धालु व्यक्ति का फोन हम लेकर आए थे। उसके माध्यम से अब हम श्री सम्पूर्ण सिंह के पोते को यह सूचना देंगे, क्योंकि वह भी हरिसिंह के नाम से अपरिचित थे।

शाम को जालन्धर जाते हुए रास्ते में तलवन की ओर मुड़ गए। तलवन की ओर जाने लगे तो मेरे साथ वालों को बड़ी आशा थी कि वहाँ आर्यसमाज की बड़ी प्रसिद्धि मिलेगी, क्योंकि यह आर्यसमाज पर तन-मन-धन वारने वाले उस स्वामी श्रद्धानन्द का पैतृक गाँव है, जिनका नाम आर्यसमाज में स्वामी दयानन्द के बाद बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। लेकिन गाँव में जाते ही सब की आशा उस समय उड़ गई जब गाँव में किसी ने उनके बारे में नहीं बताया। बड़ी मुश्किल से पूछते-पूछते एक दुकानदार के पास पहुँचे, जो इनके मकान की चाबी रखता है। जब वह स्वामी जी के पैतृक घर पर लाया तो हमें यह विश्वास ही नहीं हुआ कि यह अवशेष आर्यसमाज के इतिहास पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द के गृह के हैं। यह बात बनावट से नहीं अपितु सत्य कहता हूँ कि वहाँ के हालात देखकर हमें सन्देह होने लगा कि कहीं गलत स्थान पर तो नहीं आ गए लेकिन फिर उस महाशय ने बताया कि कभी ज्ञानी जैलसिंह महामहिम राष्ट्रपति भी यहाँ आये थे। आज उस घर में कोई कमरा आदि का अवशेष नहीं है। लोहे के गेट पर ताला लगा है, किसी पड़ोस वाले ने वहाँ रोड़े आदि डाल रखे हैं। एक बोर्ड तक नहीं लगा रखा कि यह इतनी महान् आर्य विभूति का घर है। उस व्यक्ति से भी हमने निवेदन किया कि लोगों को एकत्रित करने में हमारी मदद करो। लेकिन वहाँ की परिस्थितियों से वह बिल्कुल हताश लगा। बड़ी मुश्किल से एक सार्वजनिक स्थान पर बैठकर प्रचार किया। एक बुजुर्ग सरदार बड़े धर्मात्मा निकले उन्होंने पानी पिलाया व अपना फोन नंबर भी दिया।

क्रमशः अगले अंक में....

आर्यसमाज 'शहर' बड़ा बाजार, सोनीपत का निर्वाचन

श्री ईश्वरदत्त बुधीजा-संरक्षक, श्री वेदप्रकाश आर्य-प्रधान, श्री सुभाष चांदना वरिष्ठ उपप्रधान, श्री दिनेश आर्य-उपप्रधान, श्री सुदर्शन आर्य-उपप्रधान, श्री प्रवीण आर्य-मन्त्री, श्री रवीन्द्र आर्य-उपमंत्री, श्री सुभाष रहेजा-कोषाध्यक्ष, श्री दीपक तलवाड़-पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री श्यामलाल आर्य-आर्यवीर अधिष्ठाता, श्री रणवीरसिंह बागड़, लेखा परीक्षक।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः

महर्षि देव दयानन्द जी महाराज ओ३म् शब्द का अर्थ करते हैं कि यह परमेश्वर का मुख्य निज नाम है। इस नाम के साथ अन्य सभी नाम लग जाते हैं।

ओ३म् शब्द का अभ्यास करके जाप करने से फल यह होगा कि मन पर अधिकार आ जाता है।

परमेश्वर के अनेक गुणवाचक नाम हैं, साधक को जो गुण प्रिय लगे उसको चुन लो। जैसे-परमात्मा परमपिता है, वह बड़ा दयालु है। इनका अर्थ यह होगा कि परमात्मा ने ही सबका शरीर बनाकर सबके शरीरों में आत्मा को प्रवेश कराया है, इसलिये वह परमपिता है। जीवों के उपकारार्थ वह शरीर-परिवार और संसार सभी वस्तुएं, सभी फल, सभी अन्न-मेवा, औषधि, वनस्पति आदि देता है। बदले में किसी से कुछ नहीं चाहता। यह उसकी दयालुता है, कृपा है, प्रेम है, हम सभी उसी पिता की संतान हैं। अपने में प्रश्न उठायें जो यह शरीर है, क्या इसका निर्माण करने वाला है, मैं हूँ या संसार में किसी ने निर्माण किया है तो विचार करने पर भेद खुलेगा कि इसका निर्माण करने वाला भी वही परमपिता है।

मेरा भी वही पिता है। जैसे संसार में पिता सन्तान उत्पत्ति में कारण बनता है, उसका पालन करता है, उसकी रक्षा करता है, वैसे ही यह जो परमपिता है, वह अपने ही साधनों से पालन, रक्षा और देह में प्रवेश भी कराता है, इसलिए वह पिताओं का भी पिता है और मेरा भी पिता है, मेरी भी माता है, मेरा भी आचार्य है। इस लोक का रहने वाला पिता तो रक्षा, पालनादि करके मुझ से आशा करता है, इच्छा रखता है, परन्तु परमपिता तो किसी प्रकार की इच्छा (आशा) नहीं रखता। वह वेदज्ञान देकर सुझाव देता है कि यदि तू मेरी भक्ति करेगा अर्थात् मेरे गुणों को धारण करेगा तो मैं तुझे क्लेशों से छुड़ा करके अपने ज्ञान, बल, आनन्द को दे दूँगा, यदि विपरीत करेगा तो क्लेशों में पिसना पड़ेगा, नये-नये दुःख भोगने पड़ेंगे।

एक सुपुत्र का अपने पिता के प्रति क्या कार्य होता है वैसा ही साधक को अपनाना होगा। मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ, मेरे पिता के विपरीत मेरा आचरण नहीं होना चाहिये। यदि ऐसा हुआ तो अपने पिता की सम्पत्ति का अधिकारी नहीं बन सकता। इससे विरुद्ध आचरण करने पर सम्पत्ति तो मिलेगी नहीं, पिता को दूषित करने का अपराध भी लगेगा।

साधक को स्वयं को परमेश्वर का प्रतिनिधि मानना चाहिए और ऐसा है भी। जब कोई व्यक्ति अपने परिवार का परिचय देता है तो उसका प्रतिनिधि होता है। इसी प्रकार जब अपने को परमात्मा की सन्तान मानता है, उसको अपना पिता कहता है, तो परमात्मा का प्रतिनिधि होता है।

यह मेरा पिता बड़ा दयालु है। वह सब कुछ देकर भी अपने लिए मुझसे कोई वस्तु या फल की इच्छा नहीं रखता। मैं यहाँ जो भी दूसरों से व्यवहार करतीहूँ वह सब उसी के साधनों से करती हूँ, फिर भी मैं अन्यों (दूसरों) से किसी प्रकार अपेक्षा क्यों रखूँ? जिसको सुनना-पढ़ना और याद करके आत्मा में रखना यही सुनना श्रवण कर्म बीज है। मनन कर्म-मन लगाकर काम करना। या मन लगाकर सुनना, मन में परीक्षा करके देखना होता है कि यह सत्य है या असत्य। मैं इसे अपनाऊँ या नहीं। ईश्वर के गुणों पर विचार करना-ईश्वर कैसा है और वैसा ही है या नहीं, इसकी परीक्षा करके अपना भ्रम मिटाना, यह मनन कर्म नहीं हुआ है तो अगला कर्म नहीं होगा। मनन करके छोड़ दिया और अगला कर्म नहीं किया तो वैसा ही फल बनेगा जैसा कि बीज को बो दिया और उसकी रक्षा नहीं की।

अब विशेष परीक्षा करके बुद्धि पर निश्चय बनाया जाता है कि परमात्मा का मुझसे सम्बन्ध है और मुझसे यदि सम्बन्ध है। यह निश्चय हो गया तो वेद के अनुकूल आचरण करने से मेरा कल्याण और न करने से मेरी ही दुर्गति है। ऐसा ठीक-ठीक समझ लेना कर्म होगा। क्रिया रूप में लाए बिना कोई फल नहीं बनेगा। बीज को एकत्रित करना अच्छी बात है। एकत्रित करके बोकर अंकुरित करना उससे अच्छी बात है, अंकुरित की वृद्धि करना उससे भी अच्छी बात है, वृद्धि करके पकवान बनाना उससे भी अच्छी बात है, पकवान बनाकर उसको खाकर बल-वीर्य की वृद्धि करना सबसे अच्छी बात है।

यदि ऐसा नहीं किया तो सब कुछ करके भी निष्फल रहेगा, तो जो भाव बनाया है और भाव से जो ज्ञान बनाया है उस ज्ञान के अनुसार ही कर्म करने पर फल की प्राप्ति होती है। यह योग का व्यावहारिक स्वरूप है।

–कृष्णा देवी आर्या, प्रधान आर्य महिला मण्डल, गांव बालन्द, जिला रोहतक

युवा चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा के आशीर्वाद एवं नेतृत्व में आर्यवीर दल, सोनीपत की ओर से स्थानीय डी.ए.वी. स्कूल सैक्टर-15 सोनीपत में 3 जून (रविवार) से 10 जून (रविवार) तक युवा चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। सोनीपत, दिल्ली, नोएडा एवं निकटवर्ती ग्रामों के विद्यालयों के छठी से स्नातक स्तर के छात्रों, उदीयमान युवाओं की शताधिक संख्या ने शिविर में लाभ प्राप्त किया। आठ दिवसीय आवासीय शिविर में विख्यात दर्शनाचार्य संदीप जी की अध्यक्षता में छत्तीसगढ़ से पधारे मुख्य व्यायाम शिक्षक श्री शैलकुमार जी ने शिविरार्थियों को सर्वांग व्यायाम, योगासन, आत्मरक्षार्थ जूडो-कराटे, लाठी आदि का प्रशिक्षण दिया। शिविरार्थियों ने कई प्रकार के आसन, व्यायाम, लाठी चलाने की विद्या के अतिरिक्त मानव पुल, स्तूप, पिरामिड्स आदि निर्माण की कला का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। रविवार 3 जून को सायं 4 बजे यज्ञ से शिविर का आरम्भ हुआ। सोनीपत के प्रतिष्ठित आर्यवीर दल के संरक्षण, पूर्व प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, सोनीपत, महात्मा वेदमुनि जी (वेदपाल आर्य) ने आर्य केन्द्रीय सोनीपत के प्रधान चौ० रणधीरसिंह ढुल जी के साथ 'ओ३म्' ध्वजारोहण किया। शिविरार्थियों हेतु पूरे सात दिन भोजन, आवास की व्यवस्था विद्यालय में की गई। 9 जून को सायंकाल 6 बजे सैक्टर-15 क्षेत्र की गलियों में आर्य वीरों द्वारा पद संचालन तथा मिनी शोभायात्रा भी निकाली गई। वेदप्रचार रथ, आर्यवीरों के व्यायाम प्रदर्शन आदि से सैक्टर-15 क्षेत्र के निवासीगण काफी प्रभावित हुए। 10 जून रविवार को प्रातः 8 बजे बृहद् यज्ञ के साथ शिविर का समापन समारोह आरम्भ हुआ। सचिव सुदर्शन आर्य के भजन तथा आर्य वीरों की प्रेरणार्थ श्री मनोहरलाल जी के भजन से कार्यक्रम आरम्भ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात वैदिक प्रवक्ता डॉ० सत्यवीर वेदालंकार (सैक्टर-23) ने की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान श्री रामपाल जी आर्य तथा प्रान्तीय वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री रमेश आर्य का भी समारोह में सान्निध्य और आशीर्वाद प्राप्त हुआ। डीएवी स्कूल के प्राचार्य विवेक मित्तल जी, पूर्व मण्डलपति श्री नित्यप्रिय जी आर्य, आर्यसमाज बेगा के यशस्वी प्रधान, अनुभवी वयोवृद्ध श्री कंवलनैन जी, दयानन्द प्रतिनिधि सभा के श्री जवाहरलाल बत्रा, सरस्वती सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल कबीरपुर के शिक्षाविद् श्रीरामफल ढुल्ल, रेवली पाणिनि महाविद्यालय के यशस्वी आचार्य प्रदीप जी ने समापन समारोह में शिविरार्थियों को आशीर्वाद एवं अपनी शुभकामनाएँ दीं एवं शिविर के आयोजन हेतु सत्प्रयासों की प्रशंसा की।

–सुदर्शन आर्य, सचिव

'वेदों की ओर लौटो' अभियान में तेजी लाने के लिए वेदप्रचार मण्डल सोनीपत को किया रथ भेंट

सोनीपत 23 जून 2018। आर्यसमाज सैक्टर-14, सोनीपत में एक सम्मेलन में मा० रामपाल आर्य सभाप्रधान, श्री उमेद शर्मा सभामन्त्री, श्रीमती सुमित्रा आर्या सभा-कोषाध्यक्ष, आचार्य सर्वमित्र आर्य प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाण एवं श्री रमेश आर्य वेदप्रचाराधिष्ठाता ने वेदप्रचार मण्डल जिला सोनीपत को 'वेदों की ओर लौटो' अभियान में तेजी लाने के लिए वेदप्रचार रथ भेंट किया। इस वेदप्रचार रथ में मंच, माइक, लाइट, दरियाँ आदि सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यह वेदप्रचार रथ जिला सोनीपत के गाँव-गाँव तथा विद्यालय एवं महाविद्यालयों में जा-जाकर वेदों का प्रचार अभियान चलायेंगे। इस मौके पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विनय आर्य व सभा उपप्रधान रमेश आर्य भी शामिल हुए। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को 'वेदों की ओर लौटो' अभियान चलाने के लिए 14 रथों की व्यवस्था करने पर बधाई दी और श्री विनय आर्य ने 25, 26, 27 एवं 28 अक्तूबर 2018 को जापानी पार्क, दिल्ली में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए न्यौता दिया। उन्होंने बताया कि इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में 36 देशों के प्रतिनिधि भी भाग लेंगे। इस सम्मेलन में जिला के प्रमुख वेदप्रचार मण्डल के पदाधिकारियों के अलावा जिला सोनीपत के सभी आर्यसमाजों से प्रतिनिधि शामिल होंगे और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा जिला वेदप्रचार मण्डल सोनीपत को किये गये वेदप्रचार रथ भेंट करने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को विश्वास दिलाया कि जिला सोनीपत का एक भी गाँव वेदप्रचार अभियान से वंचित नहीं रहेगा। इस कार्यक्रम में वेदप्रचार मण्डल सोनीपत व आर्यसमाजों प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया।

–देवेन्द्र आर्य, मन्त्री, वेदप्रचार मण्डल, सोनीपत

बृहद् यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक 20 मई 2018 को आर्यसमाज मोखरा जिला रोहतक में वेदोपदेश कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ उपरान्त मैत्री, करुणा, दया के सुसंस्कारों से आचार्य जी ने बालकों को सम्बोधित किया। आर्यसमाज में छात्र-छात्राएं यज्ञ व पठन-पाठन का नित्य अभ्यास करते हैं। श्री राजवीर जी एवं श्री राजेन्द्र जी के प्रबन्धन से श्री विद्यानन्द व उनके शिष्य प्रतिदिन निःशुल्क ट्यूशन से बालकों को आर्यसमाज में आकृष्ट कर रहे हैं।

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

वेदप्रचार मण्डल जिला गुरुग्राम द्वारा 27.05.2018 से 03.06.2018 तक महर्षि दयानन्द सीनियर सैकेण्डरी स्कूल गांव माकडोला जिला गुरुग्राम में छात्र एवं छात्राओं का चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस शिविर में 178 छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया। 27.05.2018 को शिविर का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सम्माननीय प्रधान श्री रामपाल जी आर्य के करकमलों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। मंच पर प्रतिष्ठित आर्य विद्वानों में श्री रमेशचन्द्र जी आर्य संयोजक वेदप्रचार मंडल हरयाणा, श्री वी.पी. सिंह जी, श्रीमती सुखदा आर्या, श्रीमती उषा आर्या, श्री तिलकराज जी आर्य भी उपस्थित रहे। वेदप्रचार मण्डल जिला गुरुग्राम के प्रधान श्री के.सी. सैनी ने मण्डल के कार्यों से अवगत कराया। मंच संचालन मण्डल के महामन्त्री श्री वेदभानु आर्य द्वारा किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान श्री रामपाल जी आर्य के अध्यक्षीय भाषण के पश्चात् शिविर की विधिवत् कार्यवाही प्रारम्भ की गई। 27.05.2018 से 03.06.2018 तक बौद्धिक प्रशिक्षण श्री कन्हैयालाल आर्य उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री अरविन्द जी शास्त्री, श्री रामवीर जी शास्त्री, श्री वी.पी. सिंह जी, श्रीमती सुखदा आर्या द्वारा बहुत सरल भाषा में दिया गया। छात्रों को शारीरिक प्रशिक्षण श्री रितेश शास्त्री एवं श्री रोहित शास्त्री ने दिया तथा छात्राओं को कु० मीनाक्षी आर्या व कु० खुशबू आर्या ने बहुत लगन के साथ प्रशिक्षित किया। शिविर सुचारु रूप से एवं दिनचर्याबद्ध संचालित किया।

समारोह सम्पन्न दिवस 03.06.2018 का शुभारम्भ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान श्री कन्हैयालाल की अध्यक्षता में हुआ। शिविरार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। शिविरार्थियों ने शारीरिक व्यायाम, जूडो-कराटे, स्तूप निर्माण का अभूतपूर्व प्रदर्शन किया। छात्र-छात्राओं के अभिभावकों ने भी कार्यक्रम को सराहा। शिविर में महर्षि दयानन्द सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल गांव माकडोला के प्रबन्धक श्री जोगिन्द्र सिंह सहरावत एवं प्रिंसिपल श्रीमती स्नेहलता जी के शिविर में भरपूर सहयोग के लिये मण्डल प्रधान श्री के.सी. सैनी जी ने धन्यवाद किया। श्री रोहित शास्त्री ने सरिया मोड़कर व लोहे की जंजीर तोड़कर योग, प्राणायाम की शक्ति को प्रदर्शित किया। समारोह के समापन की घोषणा करते हुए मण्डल प्रधान श्री के.सी. सैनी ने उपस्थित सभी महानुभावों, अभिभावकों, विद्वानों, स्कूल के शिक्षकों व शिक्षिकाओं का हार्दिक धन्यवाद किया। तत्पश्चात् सभी के लिए ऋषिलंगर में स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गई।

–वेदभानु आर्य, महामंत्री, वेदप्रचार मण्डल जिला गुरुग्राम

योग-साधना शिविर सम्पन्न

वैदिक योगाश्रम भऊ आर्यपुर रोहतक में 28 मई से 2 जून तक योग एवं स्मृतिवर्धन शिविर आचार्य वेदमित्र जी द्वारा लगाया गया। आचार्य वेदमित्र जी द्वारा बालकों

में स्मृति उत्थान के क्रियात्मक प्रशिक्षण से बालक लाभान्वित हुए। आचार्य जी ने बालकों में दो मिनट में 4-5 मन्त्रों को कण्ठस्थ करने का अभ्यास करवाया। गणित व वैज्ञानिक विषय को अंगुली पर याद करवाने की विधि से यह संभव हुआ। पिछली कक्षा के विषय को पुनः स्मरण करके अगले विषय को सरल विधि से कण्ठ खोलकर प्रस्तुत किया। योग आसन, प्राणायाम आदि का अभ्यास श्री आनन्द आर्य द्वारा किया गया।

शोक-समाचार

आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग अम्बाला कैंट के कोषाध्यक्ष श्री भूपेन्द्र खरबन्दा जी का 17 मई 2018 को आकस्मिक निधन हो गया है। वे 69 वर्ष के थे तथा 4 वर्ष से बड़े साहस एवं धैर्य के साथ बीमारी से जूझ रहे थे। एक कर्मयोगी की भांति अन्त तक वे आर्यसमाज के उत्थान में लगे रहे। 2009 में सैंट्रल बैंक से सीनियर मैनेजर रिटायर होने के बाद जीवन का पूर्ण समर्पण वेदप्रचार के लिए कर दिया था। वे आर्य कन्या महाविद्यालय में उपप्रधान, मुसद्दीलाल आर्य गर्ल्ज स्कूल के प्रबन्धक तथा आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष का कार्यभार सफलता एवं दक्षता से कर रहे थे। उनका संसार से जाना केवल परिवार के लिए ही नहीं अपितु आर्यजगत के लिए भी अपूरणीय क्षति है। **–सभामन्त्री**

गुरुग्राम में आर्य वीर दल शिविर के समापन के अवसर पर आर्य वीर अपनी मनोहक प्रस्तुति देते हुए।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद में आर्य वीर दल दिल्ली के शिविर समापन पर आर्यवीरों की मनोहक प्रस्तुति।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिविर में महाशय धर्मपाल जी का स्वागत करते हुए आचार्य सर्वमित्र आर्य साथ में हैं स्वामी देवव्रत जी व श्री उमेद सिंह।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद में आर्य वीर दल दिल्ली के शिविर समापन पर मुख्यातिथि महाशय धर्मपाल आर्य, विशिष्ट अतिथि आचार्य सर्वमित्र आर्य।

आर्य वीर दल एवं वेद प्रचार मण्डल रेवाड़ी द्वारा शोभा यात्रा की अगुवाई करते हुए आचार्य सर्वमित्र आर्य, श्री विनय आर्य, श्री उमेद सिंह, श्री रमेश आर्य व अन्य।

गांव-मोखरा, रोहतक में आचार्य वेदमित्र जी वेद प्रचार करते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में संस्कृत सम्भाषण शोभा यात्रा को यज्ञोपरान्त सम्बोधित करते हुए सभा मंत्री श्री उमेद सिंह ।

ओ३म्

यज्ञ-योग और स्वाध्याय जीवन में अपनाएं - आर्यसमाज के साथ कदम से कदम बढ़ाएं

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

25 से 28 अक्टूबर 2018

दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018

दिल्ली (भारत)

25 से 28 अक्टूबर 2018

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

तदनुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३, ४ विक्रमी संवत् २०७५

-: सम्मेलन स्थल :-

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85

यज्ञ, योग, वैदिक सत्संग और प्रवचनों से लाभ उठाने हेतु

भारी सख्या मे परिवार सहित सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 91-9540029044

E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org

YouTube thearyasamaj 9540045898

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

श्री ....

पता ....

....

"आर्य प्रतिनिधि" लौटाने का पता :

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा